I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

भारतीय कृषि का बदलता स्वरूप एक चिंताजनक विषय

शमशेर सिंह [1*], डॉ. मोहम्मद इरफान [2]

[1] पी.एच.डी. रिसर्च स्कॉलर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, आई.ई.सी. विश्वविद्यालय, बद्दी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, आई.ई.सी. विश्वविद्यालय, बद्दी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author: शमशेर सिंह *

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17767702

सारांश

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीड़ की हडडी मानी जाती है पुरातन काल से केवल कृषि ही एकमात्र साधन था जिससे कि मनुष्य की आजीविका चलती थी भारतीय कृषि वह है । जिसमें फसल उत्पादन और पशुपालन सहित प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के पौधो और जीवों की खेती की जाती है जिससे कि मानवीय जरूरतों को पूरा किया जा सके यह एक प्राथमिक कार्य है जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था और 58 प्रतिशत अधिक आबादी की आजीविका के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिसमें चावल गेहूं दालों कपास चाय और अन्य फसलें उगाई जाती है कृषि के साथ साथ पशुपालन भी भारतीय कृषि का एक अभिन्न अंग है, जिसमें कि पशुओं से संबधित कार्य जैसे मतस्य पालन और मुर्गी पालन शामिल है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 20-07-2025
- **Accepted:** 29-08-2025
- **Published:** 31-08-2025
- **IJCRM:**4(4); 2025: 702-704
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

शमशेर सिंह, डॉ. मोहम्मद इरफ़ान. भारतीय कृषि का बदलता स्वरूप: एक चिंताजनक विषय. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(4):702-704.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: भारतीय कृषि विकास, जैविक खेती एवं पोषक तत्व, रासायनिक उर्वरक और पर्यावरण, कृषि चुनौतियाँ और समाधान, सतत कृषि एवं खाद्य सुरक्षा.

परिचय

भारतीय कृषि देश की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार है। जो कि सकल घरेलू उत्पाद बहुमूल्य योगदान देती है इसके बाद ग्रामीण आबादी को बड़े पैमाने पर रोजगार देती है खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने और ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका प्रदान करने के लिए भारतीय कृषि एक आवष्यक क्षेत्र है, कृषि के द्धारा ही सूती वस्त्र चीनी और पटसन जैसे उद्योगो को कच्चा माल देती है, इसके साथ ही चावल मसाले व चाय जैसे उत्पादों को निर्यात कर विदेषी मुद्रा अर्जित करती है। भारत की आबादी का एक बडा हिस्सा कृषि पर निर्भर है। जो उन्हे

© 2025 शमशेर सिंह, डॉ. मोहम्मद इरफान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

आय और जीवन यापन का साधन प्रदान करती है । जिससे कि उनकी रोजी रोटी का भी निमार्ण होता है जो कि आदमी की सबसे पहली मूलभूत आवश्यकता है जिससे कि इस धरती जीवन जीना सफल होता है ।1

अनुसंधान के उदेश्य

अब भारत में विदेशों की तर्ज पर ही रासायनिक तथा जैविक पदार्थो का प्रयोग कीडे मकोड़ो से बचाव के लिए किया जाता है जबकि उर्वरकों का प्रयोग पौधो की वृद्धि में मदद करने के लिए ही किया जाता है इनका उपयोग हमारी कृषि में दिन प्रतिदिन बड़ता ही चला जा रहा है इनका अत्यधिक प्रयोग करने से हमारी भूमि की उर्वरक शक्ति पर कितना ही खतरनाक तरीके से बुरा असर पड़ सकता है इस प्रकार इन जहरीले कीटनाशकों के उपयोग करने से फसलों पर बुरा प्रभाव पड़ता है जैसा कि कृषि में कीटनाशकों के इस्तेमाल से भले ही कुछ समय के लिए कृषि उपज को बढावा मिलता है। लेकिन दीर्घ समय तक इनकों प्रयोग करने के बहुत खतरनाक परिणाम हो सकते है भारतीय कृषि में वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग का मुख्य नकारात्मक प्रभाव प्रमुख रूप से पर्यावरण प्रदूषण , मिटटी की उर्वरता का ह्रसास जल स्त्रोतों का प्रदूषण और ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में वृद्धि है इसके अतिरिक्त यह मशीनों और रसायनों पर निर्भरता को बड़ाता है जिससे कि किसानों के लिए लागत बड़ जाती है इसके साथ ही मशीनीकरण से बहुत ज्यादा ही बेरोजगारी भी बड़ती है फिर उसके बाद लघु जोत वाले किसानों के लिए मशीनें अक्सर अनुपयोगी होती है जिससे कि कृषि पर की जाने वाली लागत बड़ जाती है रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकें के अत्यधिक उपयोग से मिटटी की उर्वरता कम होती है और मिटटी मे हानिकारक रसायनों को जमाव हो जाता है जिसमें कीटनाशक और उर्वरक जल स्त्रोतो में पहुंचकर उन्हे प्रदूषित करते है जिससे जल आधारित परिस्थितिकी तंत्र पर बुरा प्रभाव पढता है ।2

अनुसंधान पद्धति

भारतीय किसानों के सामने बहुत सारी चुनौतियां है जिनमें बढती लागत और असमय मौसम और बाजार की अनिष्चितांए ष्षामिल है। भारतीय किसानों को सशक्त बनाने और उनके सतत विकास को सुनिष्चित करने के लिए नवीन दृष्टिकोण अपनाना और उन्हे आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवाना आवश्यक है कृषि क्षेत्र में जैविक खेती अपनाने का यह सबसे अच्छा समय है, क्योकि इससे खेती की अतिरिक्त लागत कम होगी तथा इसके बाद फसलों की समग्र पैदावार और सेहत में काफी सुधार होगा इस तरह से पर्यावरण सरंक्षण में भी महत्वपूर्ण रूप से योगदान मिलेगा । इसके लिए हमें फसल अवशेष प्रबंधन के लिए पर्यावरण अनुकूल तरीकों का इस्तेमाल कर सकते है इस तरह से ऐसे कृषि उपकरणों का इस्तेमाल कर जिनसे आप खेतों में फसल अवशेष को जैविक खाद के रूप में इस्तेमाल कर सके । इसके लिए कृषि वानिकी तकनीक अपना सकते है किसानों को अपने कार्यो में पेडो या झाडियों को शामिल करके पौधो जानवरों और जल संसाधनों के लिए छाया और आश्रय प्रदान कर सकते है इसके साथ ही फल या मेवे की फसलों से अतिरिक्त आय भी अर्जित कर सकते है इस प्रकार से बदलती जलवायु बडती वैश्विक जनसंख्या खाद्य पदार्थो की बड़ती हुई कीमतें और पर्यावरणीय तनाव इन सभी का आने वाले दशकों में खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण लेकिन अनिष्चित प्रभाव पड़ेगा । वेश्विक परिवर्तन के प्रति अनुकूलन रणनीतियों और नीतिगत प्रतिक्रियाओं की तत्काल आवश्यकता है, जिसमें जल आबंटन भूमि उद्योग पैटर्न खाद्य व्यापार कटाई के बाद खाद्य प्रसंस्करण और खाद्य कीमतों और सुरक्षा से निपटने के विकल्प शामिल है ।3

भारतीय कृषि के लिए महत्वपूर्ण तत्व

भारत में खेती रासायनिक आदानों पर बहुत अधिक निर्भर हो चुकी है जिसके कारण अब भारतीय कृषि को बहुत सारी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। भारतीय कृषि के लिए महत्वपूर्ण तत्वों में वर्षा ;विशेषकर मानसून द्ध मिटटी की गुणवता सिंचाई और जल उपलब्धता उन्नत बीज कीट और रोग नियन्त्रण तथा तकनीकी ज्ञान और बाजार और व्यापार की बहुत अच्छी जानकारी शामिल है जो कि फसल और उपज को प्रभावित करते है कृषि में पोषक तत्वों का महत्व पौधो में पर्याप्त वृद्धि उच्च पैदावार और बेहतर गुणवता के लिए आवश्यक है लेकिन रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक मात्रा में प्रयोग भूमि के पोषक तत्वों को नुकसान पंहुचा सकते है इसलिए यदि भूमि के पोषक तत्वों को बचाना है तो किसी तरह से कृषि को जैविक तरीके से करने पर ज्यादा बल देना होगा

निष्कर्ष

यद्यपि पुरातन फसलों की बात की जाए तो बहुत सारी फसलें उगाई जाती है, लेकिन समय के साथ और कृषि का व्यापारीकरण होने के कारण बहुत ज्यादा
नकदी फसलों को उगाहने की ओर ज्यादा प्रोत्साहन दिया गया । कृषि का व्यापारीकरण करने में अंग्रेजो ने प्रमुख भूमिका निभाई जिनको कि अपने मषीनों के लिए उत्पादन करने में कच्चे माल की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति केवल कृषि के द्धारा ही की जा सकती थी इंग्लेंड में औधोगिकरण के कारण इसका प्रभाव भारत में पडना स्वाभाविक था क्योकि भारत इस समय ब्रिटेन का महत्व पूर्ण उपनिवेश था । भारतीय कृषि देश के आर्थिक जीवन का प्राण है, यहां की कृषि मुख्यत मानसून पर आधारित है कृषि की आंतरिक एंव अंतराष्ट्रीय व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका है यहां पर कृषि से कच्चा माल उद्योगों को प्राप्त होता है। 4
पोषक तत्व पौधों को बीमारियों से लड़ने मजबूत जड़े विकसित करने और प्रकाष सश्लेषण के लिए उर्जा बनाने में

© 2025 शमशेर सिंह, डॉ. मोहम्मद इरफान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मदद करते है जबकि इनकी कमी से फसल की वृद्धि रूक सकती है इसके बाद उपज घट सकती है पोषक तत्वों के कुषल उपयोग से पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए फसल उत्पादन को ही अधिकतम किया जा सकता है जिससे अधिकतम उर्वरक के प्रयोग से होने वाले प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है पोषक तत्वों केा सही मात्रा में ही फसल की पैदावार बड़ती है उसके गुणों जैसे प्रोटीन अनाज और फल में सुधार होता है जिससे कि किसानों को अधिकतम लाभ होता है भारतीय कृषि में जैविक तत्वों का बहुत अधिक महत्व है क्योकि ये मिटटी की उर्वरता को बड़ाते है, तथा पर्यावरण की रक्षा करते है। इसके बाद ही ये फसल उत्पादकता में भी सुधार करते है। इसके अलावा ये रासायनिक खादों पर निभर्रता को कम करके किसानों की आय बड़ाने में मदद कर सकते है जैविक खेती से न केवल स्वस्थ खाद्य पदार्थ पैदा होते है बल्कि यह मिटटी के भौतिक और रासायनिक गणों में भी सुधार करती है पानी की धारण क्षमता को भी बडाती है इसके बाद ये मिटटी के कटाव के भी कम करती है भूमि की उर्वरता शक्ति में वृद्धि के लिए जैविक खाद का प्रयोग किया जाता है, जैविक खाद से मिटटी के भौतिक गुणो जैसे शक्तिशाली बनाने अच्छा वायु संचार और जड़ो के आसान प्रवेष को बेहतर बनाते है जिससे मिटटी का कटाव भी कम होना शुरू हो जाता है जैविक तत्वों के उपभोग से मिटटी पानी और खाद्य पदार्थों के माध्यम से होने वाले रासायनिक प्रदूषण में कमी आती है कृषि में जैविक खेती वह बिधि है जो कि उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम प्रयोग पर आधारित है जिसमें कि भूमि की उर्वरा शक्ति को मजबूत बनाने के लिए फसल चक्र हरी खाद कम्पोस्ट आदि का प्रयोग करती है जैविक खेती से भूमि की उपजाउ क्षमता में वृद्धि होती है रासायनिक खाद पर निभर्रता कम होने से लागत में कमी आती है जैविक खेती के करने से फसलों की उत्पादकता में वृद्धि होती है बाजार में जैविक उत्पादों की मांग बड़ने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है जैविक खादों के प्रयोग से भूमि की गुणवता में सुधार होता है, भमि की जल षक्ति धारण क्षमता में वृद्धि होती है भूमि से पानी का वाष्पीकरण अब धीरे धीरे कम होने लगता है। 5

जैविक खेती का पर्यावरण पर प्रभाव

जब भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है मिटटी खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आने लगती है कचरे का उपयोग करने से खाद बनाने में होने वाली बीमारियों में धीरे धीरे कमी आने लगती है भारतीय कृषि की शुरूआत लगभग 9000 ई0 पू0 प्राचीन काल से ही यहां पर गेहूं तथा अन्य दूसरे अनाज उगाए जाते थे लेकिन वर्तमान में भारतीय कृषि बड़ी मुश्किलों का सामना कर रही हें। जिसमें कि कटाई के बाद फसलों को होने वाले बड़े नुकसान तथा कम पैदावार और अपर्याप्त कृषि का बुनियादी ढांचा आदि शामिल है6। भारतीय कृषि के बदलते स्वरूप में नई फसलों तकनीको बाजारों और किसानो की ही सहायता करने के लिए सरकार द्धारा बहुत सारी सहायताएं हो सकती है। भारत में कृषि पराम्परागत थी भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद कृषि करने के लिए भारत में इसके स्वरूप तथा उत्पादन में इस्तेमाल की जाने वाली टेक्नोलोजी में व्यापक गुणात्मक परिवर्तन हुए। स्वतन्त्रता से पहले भारतीय कृषि आत्मनिर्भर थी लेकिन अंग्रेजो ने भारतीय कृषि को तोड़ने के लिए बहुत सारे तरीके अपनाएं। स्वतन्त्रता के पष्चात कृषि का उत्पादन कई गुणा बड़ा है। लेकिन भारतीय कृषि में व्यापत कुछ कारण इसके विकास में बाधा है, आज भी भारत में प्रति हेक्टेयर भूमि में उत्पादन का स्तर बहुत ही कम है भारत में अधिकांश कृषि क्षेत्र अल्प वर्षा वाले है वहां पर सिंचाई की सुविधा भी कम है। इससे होने वाली फसलों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है, लेकिन भारतीय कृषि की कम उत्पादकता होना चिंताजनक है। जिसमें कि आशा के अनुरूप नंही होता है जिससे कि होने वाले अनाज की कमी को पूरा करना मुश्किल है। 7

संदर्भ सूची

1. पंजाब हिल स्टेट्स गजेटियर. 1910. पृ. 27.
2. नेगी एस. एस. हिमालयन फोरेस्ट एंड फोरेस्ट्री. पृ. 226.
3. पइपक. पृ. 265.
4. मियां गोवर्धन सिंह. इतिहास, संस्कृति और अर्थव्यवस्था. दा माल, शिमला. पृ. 221.
5. पइपक. पृ. 242.
6. नेगी एस. एस. हिमालयन फोरेस्ट एंड फोरेस्ट्री. पृ. 214.
7. पइपक. पृ. 223.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 शमशेर सिंह, डॉ. मोहम्मद इरफान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/